E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 640-642
Received: 03-05-2020
Accepted: 18-06-2020

रईसा खातुन
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग,
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
रईसा खातुन
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग,
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

परिवार जीवन में बच्चों को घरेलू शिक्षा की भूमिका

रईसा खातुन

सारांश
आपने पारिवारिक जीवन शिक्षा देने में विभिन्न निकायों जैसे घर, स्कूल एवं धर्म के बारे में पढ़ा है। ऐसी शिक्षा के लिए घर ही सर्वोत्तम स्थान है। पारिवारिक जीवन के बारे में बचपन में जो प्रारंभिक दृष्टिकोण बनता है वहीं बाद के दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है। माता–पिता ही इस शिक्षा के लिए प्रथम एवं साथ ही सर्वोत्तम शिक्षक भी हैं। बच्चों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण में घर की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। बच्चों को पारिवारिक जीवन के लिए तैयार करना माता–पिता की नैतिक जिम्मेदवारी होती है। सेक्स की शिक्षा प्रदान करना भी घर की जिम्मेदारियों में से एक है।

प्रस्तावना:
आप पहले ही पारिवारिक जीवन शिक्षा के महत्व और उद्देश्यों का अध्ययन कर चके हैं। इस अध्याय में पारिवारिक जीवन शिक्षा में घर, स्कूल, और धर्म की भूमिका का आययन करेंगे। साथ ही पारिवारिक जीवन शिक्षा के लिए अलग अलग स्तरों पर अपनाई जाने वाली पद्धतियों के बारे में भी जानेंगे।

जब हम पारिवारिक जीवन शिक्षा की पद्धतियों के बारे में सोचते हैं तो प्रायः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ये जिम्मेदारी किसकी हो? क्या पढ़ाया जाए? कब पढ़ाया जाए? किस प्रकार पढ़ाया जाए? कितना पढ़ाया जाए? ये वे सामान्य प्रश्न हैं जो प्रायः अभिभावक, शिक्षक एवं इससे जुड़े अन्य लोगों के मन में उठते हैं. इन्हीं का उत्तर देने की यहाँ कोशिश की जा रही है।

सामाजिक कार्यकर्ता जो पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़े हैं वे इस बात का उत्तर दे सकते हैं कि पारिवारिक जीवन में प्रशिक्षण किसको दिया जाए? इस संबंध में अभिभावकों के दृष्टिकोण का वर्णन करते हैं। उनका कहना है कि प्रायः पिता यह विचार व्यक्त करते हैं कि बच्चों को शिक्षित करना माताओं का काम है। माताएँ अनुभव करती है कि यह काम शिक्षकों का है। शिक्षक यह महसूस करते हैं कि यह अन्य बाहरी विशेषज्ञों मसलन धर्म गुरुओं या उपदेशकों का काम है। दूसरे शब्दों में प्रत्येक पक्ष अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर डालना चाहता है। परन्तु तथ्य यह है कि यह परिवार, स्कूल और धर्मस्थल सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

पारिवारिक जीवन शिक्षा में घर की भूमिका
पारिवारिक जीवन के बारे में समझने और शिक्षित करने में घर एक आदर्श स्थान है क्योंकि माता–पिता और बच्चों के बीच वर्षों तक लगातार सम्बन्ध रहता है। यह सम्बन्ध दृष्टिकोण को विकसित करने और जानकारी बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण है। बड़े होने पर कोई व्यक्ति कैसे कार्य करता है यह बहुत कुछ इस बात से प्रभावित होता है कि उनकी बचपन की शिक्षा एवं अनुभव कैसे रहे हैं।

जो बुनियादी दृष्टिकोण प्रारंभिक वर्षों में घर पर विकसित होता है वहीं बाद के जीवन पर भी व्यापक असर बनाए रखता है। इसलिए परिवार को, बच्चे के भौतिक, भावनात्मक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक शिक्षा देने की भूमिका की जिम्मेदारी लेना अति आवश्यक है। यह पारिवारिक जीवन की बुनियादी सफलता का आधार भी है।

शिक्षक के रूप में माता पिता
बच्चों के लिए घर स्कूलों का भी स्कूल है और माता–पिता ही उनके सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होते हैं। माता–पिता के प्रति बच्चे का लगाव प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। साथ ही यहीं कहा जा सकता है कि किसी वयस्क व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके घर के बचपन के अनुभवों से अवश्य प्रभावित रहता है।

जॉन लॉक के शब्दों में बच्चे का दिमाग 'तबूला रासा' (लेटिन भाषा में इसका अर्थ साफ स्लेट होता है) की तरह है। माता–पिता इस साफ स्लेट पर कुछ भी लिख सकते हैं। परिवार के बारे में संपूर्ण ज्ञान बच्चे की शुरुआती दिनों के अनुभवों से मिलता है।

एक बच्चे को जिस प्रशिक्षण की जरूरत होती है, उसे वे सब घर से मिलते हैं तथा उसे वे जीवन के समी उतार चढाव सीखने को मिल जाते हैं। अतः घर ही सबसे प्रथम सामाजिक निकाय है।

परिवार में प्रचलित मानदण्ड और नैतिक मूल्य बाद के जीवन के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। अभिभावकों के वे उदाहरण, जैसे सामाजिक न्यायप्रियता का गुण, सभी वर्गों और जाति के प्रति उदार रबैया, त्याग और दूसरों की सहायता करना आदि गुण बच्चे को अपना स्वयं का पारिवारिक जीवन बनाने में सहायता करते हैं। घर पर ही भावनात्मक, वैयक्तिक एवं सामाजिक व्यबहार की अभिव्यक्ति के अवसर भी मिलते हैं।

चरित्र निर्माण में घर की भूमिका चरित्र पारिवारिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है? किसी भी परिवार की सफलता दम्पत्ति के चरित्र पर निर्भर करती है। घर के सदस्यों के चरित्र निर्माण में घर की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। सफलता या असफलता, अच्छा या खराब, सामंजस्य और खुशी अथवा शोक यह सब बुद्धिमता की अपेक्षा चरित्र से ज्यादा प्रभावित और निर्भर होते हैं।

चरित्र मनुष्य को कुछ निश्चित सिद्धान्तों पर चलने को प्रेरित करता है। चरित्रवान मनुष्य पर भरोसा और विश्वास किया जा सकता है। अतः घर पर ही चरित्र का प्रशिक्षण एवं शिक्षा पूरे परिवार के लिए अनिवार्य है। आधुनिक युग में जिन्दगी के प्रत्येक हिस्से में अच्छे नेतृत्व का अभाव महसूस किया जाता है। इसका मुख्य कारण घर की ही गलती है। यह चरित्र निर्माण के दौरान अचो घरेलू बातावरण की अपर्याप्ता का प्रतिपाल होता है।

माता पिता की यह जिम्मेदारी होती है, ये बच्चों को सर्वत्र स्वीकार्य लड़के–लड़की बनने, या समम किशोर तैयार करने, अथवा आपली सहभागिता एवं समन्वयकारी पति–पत्नी अथवा अच्के माता पिता बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करें। अचरों से ही अको लोगों की रचना होती है। यदि माता–पिता अच्छा व्यवस्थित जीवन जी रहे है तो बच्चे भी वैसा ही वैवाहिक जीवन, घर और परिवार बना सकते हैं। बच्चा जो प्यार, सुरक्षा एवं लगाव पाता है और सुशहाल परिवार में अच्छी देखभाल प्राप्त करता है, उसकी एक सचेत एवं खुशहाल पारिवारिक जीवन की और अच्छी शुरुआत होती है।

घर पर वैवाहिक जीवन के बारे में शिक्षा

बच्चों को विवाह के लिए शिक्षा देने का कार्य किसको आरंभ करना चाहिए? जैसा कि आप देखते हो सभी तरह की शिक्षा के लिए घर ही एक प्रारम्भिक बिन्दु है। एक बच्चे की एक लड़का अथवा लड़की, एक पति अथवा पत्नी एक माता अथवा पिता के रूप में जो छवि बनेगी उसका आकार घर के सामाजिक एवं भावनात्मक बाताबरण के अनुरूप बनेगी।

एक बच्चा विवाह एवं परिवार के बारे में अपने माता–पिता से क्या सीखता है? उत्तर है, कि एक बच्या पारिवारिक जीवन की अच्छाइयों अथवा कमियों अपने माता–पिता से जान लेता है। ये प्यार करने और उसे प्यार पाने की कला. स्नेह करने और पाने की कला एवं सामंजस्य और त्याग की कला परिवार से सीखते है। मानव व्यवहार एवं समन्चय की कला का पहला पाठ परिवार से सीखा जाता है। लड़कियों जहाँ घर में ही घर सवारने की कला सीखती हैं वहीं लड़के मर्दाना दक्षता के कार्य सीखते हैं। माता–पिता का नैतिक दायित्व है बच्चों को वैवाहिक जीवन के लिए तैयार करें। पारिवारिक जीवन के बारे में आवश्यक शिक्षा बम्बों को यह जानने के लिए प्रेरित करती है कि घर की प्रकृति एवं उसका मतलब क्या है जिसका कि स्वयं वे भी एक हिस्सा हैं। इससे उनको अपने स्वयं के पारिवारिक जीवन के लिए तैयार होने में मदद मिलती है।

घर एवं व्यक्तित्व निर्माण

हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में घर की क्या भूमिका है? एक बच्चा क्या जानता है इससे ज्यादा आवश्यक यह है कि एक बच्चा क्या जानता है। एक अच्का व्यक्तित्व एक सर्वोत्तम मूल्यवान उपहार है जो माता–पिता अपने बच्चों को दे सकते हैं। व्यक्तित्व के सामान्य विकास के लिए बच्चे को संतोषप्रद पारिवारिक जीवन उपलब्ध होना चाहिए। ऐसे घर जिनमें माता–पिता एवं बये सुख दुख में साथ साथ शरीक होते हैं. जब दोस्तों एवं रिश्तेदारों के मध्य मनोरंजक क्रियाओं में, बच्चे भी माता–पिता के साथ ही हिस्सा लेते हैं। जहाँ हमेशा शान्ति एवं खुशी का वातावरण रहता है उनके बच्चे व्यक्तिगत रूप से व्यवस्थित एवं सामाजिक रूप से आत्मविश्वासी व्यक्ति बनते हैं। ऐसे बचे दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाते समय व्यक्तिगत क्षमता एवं जिम्मेदारी का अच्छा निर्वाह कर लेते हैं।

पारिवारिक जीवन में कुछ बुनियादी मानवीय आवश्यकताएँ उपलब्ध होती हैं वे अन्य किसी जगह की अपेक्षा ज्यादा प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होती है। माता–पिता जो वास्तव में एक दूसरे को समर्पित हैं वे अपने बच्चों को सुरक्षा की भावना देते हैं। ये माता–पिता मानवीय सम्बधों का अवचेतन मॉडल भी स्थापित करते है। बाये समझ सकते हैं कि आपसी मतभेदों और विवाद के बावजूद भी परिवार की वफादारी पर कभी आँच नहीं आती। आगे चलकर ये ही बच्चे मजबूत पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित कर पाते हैं। ऐसा अनुभव किताबों से अथवा स्कूली कक्षाओं में नहीं मिल सकता। यह अनुभव केवल दिन–प्रतिदिन की पारिवारिक जिन्दगी में ही मिल सकता है।

आप अपनी वंशागत आदतें एवं व्यवहार कहीं से प्राप्त करते है? निश्चित रूप से आपकी अधिकांश अच्छी या बुरी प्रवृत्तियों अपने माता–पिता से उसराधिकार में प्राप्त होती हैं। ये प्रवृत्तियों ही आपकी आदतें या व्यवहार का रूप लेती हैं। यह उस वातावरण का प्रतिफल है जिसमें आप पलते और बड़े होते हैं। व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण तत्व है उत्तराधिकार, वातावरण और शिक्षा । ये सभी तत्व घर पर ही उपलब्ध होते हैं। वृक्ष शाखा जिधर झुकती है, पेज भी उधर ही झुकता है। हजारों मील की दौड़ भी पहले कदम से ही शुरू होती है।

सेक्स शिक्षा में घर की भूमिका

सेक्स शिक्षा एवं पारिवारिक जीवन की शिक्षा एक समान है यद्यपि वे आपस में सम्बन्धित है लेकिन सेक्स शिक्षा पारिवारिक जीवन की शिक्षा के समान नहीं है। निःसंदेह, सेक्स भी पारिवारिक जीवन में अहम भूमिका रखता है। आजकल, अनुसंधानों से पता लगा है कि लगाव, प्यार और एक दूसरे का साथ, ये सारी बातें दम्पत्ति के लिए अति आवश्यकत हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति अधिकांशतः सेक्स सम्बन्धों के द्वारा होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सेक्स, वैवाहिक जीवन में विशेष महत्व रखता है। बहुत लोगों का विचार है कि वैवाहिक जीवन की सफलता या असफलता संतोषजनक सेक्स सम्बन्धों पर निर्भर करती है। यह बात सफल पारिवारिक जीवन में सेक्स शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है।

दुर्भाग्य से बच्चों के लिए बहुत जल्दी ही बहुत कुछ पाने की ललक से अनावृत है जबकि नैतिक शिक्षा एवं मार्गदर्शक न्यून है। अतः बच्चों को सेक्स के प्रति दिशा एवं मार्गदर्शन देने की अहम भूमिका घर की होती है। सेक्स शिक्षा के लिए अलग से एक खण्ड में अध्ययन किया जाएगा अतः इस इकाई में यह विषय विस्तार में नहीं लिया गया है।

घर पर होने वाली शिक्षा के मार्ग में कठिनाइयाँ

सभी घरों में पारिवारिक जीवन के बारे में शिक्षा प्रदान करने की सुविधा होती हैं। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है। तो इस रास्ते में आने वाली रुकावटें निम्नलिखित हैं–

क) माता–पिता की असफलता : आजकल अधिकांश परिवारों में

एक या दो बच्चे ही होते हैं। अतः माता–पिता अपने बच्चों को किसी तरह की बड़ी या छोटी जोखिम उठाने की इजाजत नहीं देते। अत्यधिक सुरक्षा एवं अति महत्वाकांक्षी की भावना व्याप्त रहती है। अत्याधिक सुरक्षित वातावरण में पले बच्चे बाद की जिन्दगी में आने वाले सामान्य खतरों का सामना भी ठीक से नहीं कर पाते। वे एक संरक्षित जीवन जीने की लालसा रखते हैं।

ख) माता–पिता का अति आशावादी होना : माता–पिता बच्चों से बहुत बड़ी उम्मीदों रखते है। शिक्षा प्रणाली भी अत्यधिक प्रति स्पर्धात्मक हो गई है। जो बच्चे माता–पिता की उम्मीदों पर पूरा नहीं उतरते, वे कई व्यबहारजन्य समस्याओं का सामना करते हैं। वे पारिवारिक जीवन में अको जीवन साथी नहीं बन पाते।

ग) तिरस्कृत बच्चे : माता पिता द्वारा तिरस्कृत बच्चे भी एक समस्या है। जो माता–पिता बच्चे की अनदेखी करते हैं वे एक तरह से उसको तिरस्कृत करते हैं। अब जबकि औरतों की एक बड़ी संख्या कार्यरत है बच्चों के दो पिता हो जाते हैं, दो आश्रयदाता बन जाते हैं पर माता घर पर नहीं रहती। कामकाजी माँ बच्चे की देखभाल के स्थान पर आफिस कार्य को वरीयता देती है. वह एक अस्वीकार्य अभिभावक की गिनती में आती है। ये माता–पिता जो अपने बच्चों को स्नेह, समय, साथ, नहीं देते या देखरेख और अनुशासन में कोताही रखते हैं वे बच्चों को एक सुखी और संरक्षित जीवन से वंचित करते हैं। इस उपेक्षा का फल यह निकलता है कि बच्चे अभिभावकों का ध्यान खींचने वाला व्यवहार, अन्य सदस्यों के प्रति ईष्या, कुण्ठा, चिन्ता या अत्यधिक दूसरे पर निर्भरता आदि से ग्रस्त होते हैं। ऐसे बच्चे भविष्य में अपने पारिवारिक जीवन में अके माता–पिता या जीवन साथी नहीं बन पाते।

घ) पूर्णतावादी माता–पिता : कुछ माता–पिता घर का आवास्तविक प्रतिरूप, दाग रहित. निशानरहित. सेना जैसा कठोर अनुशासन युक्त नक्शा अपने दिलो दिमाग में बिताये रखते हैं। उनके बच्चे अत्यधिक औपचारिक काढोर एवं असहज बन जाने की संभावना रहती है। उनके अन्दर विकृत मानसिकता पैदा होती है जो बाद में वैवाहिक जीवन में टूट का कारण बनती है।

च) आसक्त एवं तानाशाह माता–पिता : कुछ ज्यादा आसक्ति रखने वाले माता पिता बच्चों को ज्यादा सुख सुविधाएँ देते हैं इससे बच्चे में आत्मविश्वास की कमी रहती है जो आगे मद्यपान नशा और गैर जिम्मेदाराना तरीके से रहने की तरफ ले जाती है। तानाशाही माता–पिता बच्चों के लिए सारे फैसले खुद करते हैं। वे बच्चों को कभी भी जिम्मेवार होने नहीं देते। ऐसे बच्चे जीवन मर डरपोक एवं अधिकार विहीन रहते हैं। अति आसक्त एवं तानाशाह दोनों तरह के माता–पिताओं के बच्चों में विकृत मानसिकता पैदा होती है और विवाह एवं परिवार के बारे में उनके विचार भी विकृत हो जाते हैं।

सफलता के लिए माता–पिता के लक्षण

आजकल माता–पिता होना भी किसी चुनौती से कम नहीं है, यह एक पूर्णकालिक प्रतिबद्धता है। वास्तव में माता–पिता का कार्य एक कठिन एवं दायित्व वाला होता है साथ ही यह एक आनन्दमयी एवं प्रतिफलदायी भी है। बच्चे का पोषण करना एक जिम्मेदारी है न कि कोई त्याग। अभिभावक बनने का आनन्द उठाना और इस पर लगे रहना भी एक जिम्मेदारी है दूसरों की नकल से बचें। क्या सिखाया जाता है इससे भी अधिक महत्वूपर्ण है कि माता पिता से बच्चे क्या सीख पाते हैं।

माता–पिता को बच्चों की अलग–अलग आयु एवं स्तरों पर होने वाली आवश्यकताओं की माँग की पूर्ति अवश्य करनी चाहिए। उन्हें बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा देनी चाहिए एवं आत्म निर्भर एवं आत्मविश्वासी बनने की प्रेरणा देनी चाहिए। प्रत्येक बच्चे में कुछ जन्मजात संभावनाएँ होती हैं। माता–पिता को इन खूबियों के स्वतन्त्र विकास हेतु बच्चे को पर्याप्त समय और स्थान उपलब्ध कराना चाहिए। अत्यधिक चौकसी या जाँच पड़ताल भी अच्छी नहीं होती। अच्छा अनुशासन भी रहना चाहिए लेकिन वह कठोर नहीं होना चाहिए।

बच्चे को उसके स्वयं के दृष्टिकोण से समझना चाहिए। उसमें जिम्मेदारी की भावना का विकास करना चाहिए। माता, पिता और बच्चों के बीच उत्पन्न होने वाली अधिकांश समस्या ये आपसी बातचीत एवं तालमेल से फौरन सुलझ जाती है। बच्चे को समझने के पश्चात गुस्से और गलतफहमी की कड़वाहट से बचा जा सकता है। इससे घर में प्यार का बाताबरण पुनः स्थापित हो जाता है।

निष्कर्ष :

पारिवारिक जीवन की शिक्षा देने में माता–पिता की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। एक नदी कभी भी अपने उदगम से ऊपर नहीं जा सकती। इसी तरह जो मूल्यों की शिक्षा देते हैं वे तब तक ऐसा नहीं कर सकते जब तक स्वयं उन मूल्यों को धारण नहीं कर लेते। आज के दौर में घर का ढाँचा एवं इसकी कार्यप्रणाली काफी बदल गई है। बहुत से गृहकार्य बाह्य एजेन्सियों द्वारा कराए जाते हैं। यहीं पर स्कूल की, समकक्ष दोस्तों, एवं धर्म व पारिवारिक जीवन की शिक्षा में महत्व दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ–सूची :

1. सरयू प्रसाद चौबे (1992)– शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विद्यार्थी प्रकाशन गोरखपुर
2. पी.डी. पाठक व त्यागी (2002)– शिक्षा के सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. श्रीमती मंजू त्यागी (2002)– बाल विकास में परिवार का योगदान, प्रवक्ता टैक्सटाइल डिजाइनिंग, चित्रकला विभाग बाल विकास में परिवार का योगदान
4. फ्रीमैन उद्धृत एस.पी. गुप्ता (2003)– शिक्षा में मापन तथा मूल्यांकन, शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद
5. सी.वी. गुड उद्धृत उमेश चन्द्र कुदेशिया– शिक्षा प्रशासन, लायल बुक डिपो मेरठ (2002)